RJPP, Vol. XXI, No.II, Apr.23-Sep.23, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411, Impact Factor 8.858

भारत–श्रीलंका संबंध : एक विश्लेषण आपसी संबंधों की नई राह

डॉ० ललिता
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
जी०एस०एच०पी०जी० कॉलेज, चांदपुर, बिजनौर
ईमेलः drlalitasaroha@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र में हम भारत और श्रीलंका के संबंधों का अध्ययन करेंगे। श्रीलंका भारत के दक्षिण में स्थित एक छोटा सा द्वीपीय देश है।दोनों देश सांस्कृतिक आधार पर वर्षों से घनिष्ठ रूप में जुड़े हुए हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हम दोनों देशों के इतिहास सांस्कृ–तिक आदि यात्रा राजनीतिक और आर्थिक संबंध विशेष घटनाएं तथा सहयोग के क्षेत्र आदि पर ध्यान केंद्रित करेंगे।इस शोधपत्र में हम दोनों देशों की विषेशताओं और समानताओं की भी समझ प्राप्त करने का प्रयास करेंगे। भारत और श्रीलंका महत्वपूर्ण पड़ोसी होने के साथ ही सार्क के दो महत्वपूर्ण सदस्य भी हैं। भारत और श्रीलंका की नजदीकी यह केवल दूरी में ही नहीं बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में भी हैं।दोनों देशों में सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देकर आपसी सांस्कृतिक विनिमय को प्रोत्साहित करके दोनों देशों के लोगों के बीच सांस्कृतिक समझ को और भी विकसित किया जा सकता है ताकि दोनों देश एक दूसरे के प्रति विश्वास और सहयोग को मजबूत कर सकें। जो कि क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर सुरक्षा और सहयोग की आवश्यकताओं का समाधान करने में मदद करेगा। प्रस्तुत शोध पत्र में तमिल–सिंहला भाषा समस्या, मछुआरों की समस्या जैसे द्विपक्षीय मुद्दों के बारे मे भी अध्ययन करेंगे। आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के विभिन्न क्षेत्रों एवं श्रीलंका की इस संकट की स्थिति में भारत के द्वारा की जा रही मदद का भी विश्लेषण करेंगे।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 25.08.2023
Approved: 24.09.2023

डॉ० ललिता

भारत–श्रीलंका संबंध : एक विश्लेषण आपसी संबंधों की नई राह

RJPP Apr.23-Sep.23, Vol. XXI, No. II,

PP. 209-217
Article No. 29

Online available at:
https://anubooks.com/journal/rjpp

डॉ० ललिता

परिचय

श्रीलंका, भारत के दक्षिण में स्थित एक छोटा–सा द्वीपीय देश है। दोनों राष्ट्र सांस्कृतिक आधार पर वर्षों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। सैन्य गुटों का विरोध, औपनिवेशिक स्वतंत्रता, निःशस्त्रीकरण एवं हिंद महासागर को शांतिपूर्ण रखने के प्रयास संबंधी मुद्दों पर दोनों देश समान विचार रखते हैं। दोनो दक्षिण एशियाई देश हैं। भौगोलिक रूप से देखें तो श्रीलंका पाक जलसंधि द्वारा विभाजित भारत के दक्षिणी तट से कुछ दूर स्थित है। इस निकटता का दोनों देशों के बीच संबंधों पर बहुत प्रभाव पड़ा है। कई समुद्री मार्गों के केंद्र में श्रीलंका का होना इसे हिंद महासागर में भारत के लिये नियंत्रण का बिंदु बनाता है जो व्यापार और सैन्य गतिविधियों के लिये सामरिक रूप से महत्त्वपूर्ण जलमार्ग है।

मूल शब्द–सांस्कृतिक; औपनिवेशिक, निःशस्त्रीकरण, जलसंधि, सामरिक, मुक्त –व्यापार समझौता ,विरासत, प्रतिनिधिक, संगठन, कार्यान्वयन□,;।

भारत और श्रीलंका के संबंधों के अध्ययन के उद्देश्य कई हो सकते हैं, जैसे कि–

1. इन दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों की अध्ययन से, उनके आपसी संबंधों का विकास और प्रभाव समझना।
2. भारत और श्रीलंका के बीच राजनीतिक संबंधों के अध्ययन से, उनके बीच सामर्थ्य और समर्थन क्षेत्रों में सहयोग के अवसरों का पता लगाना।
3. दोनों देशों के बीच वाणिज्यिक संबंधों के प्रसार का अध्ययन करके, व्यापार, निवेश, और आर्थिक लाभ के माध्यम समझना।
4. दोनों देशों के बीच सुरक्षा सहयोग के अवसरों और चुनौतियों का अध्ययन करके, क्षेत्रीय और ग्लोबल सुरक्षा मामलों में उनकी भूमिका को समझेंगे।
5. भारत और श्रीलंका के बीच जनसंवाद और व्यक्तिगत संबंधों के प्रभाव का अध्ययन करके, लोगों के बीच सामाजिक और व्यक्तिगत जुड़ाव को समझेंगे।

उपकल्पनाऐ

1. भारत और श्रीलंका के इतिहास के अध्ययन से उनके संबंधों के पूरे प्रसार का अनुभव करना, जैसे कि पुराने श्रीलंकाई शासकों के साथ भारत के सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध।
2. भारत और श्रीलंका के राजनीतिक संबंधों के अध्ययन से दोनों देशों के विशेष मुद्दों, सहमतियों और विवादों को समझ सकते हैं।
3. व्यापारिक और आर्थिक संबंधों के बारे में भी अध्ययन करना , जैसे कि व्यापारिक समझौतों, निवेश और व्यापारिक सहयोग के माध्यम से दोनों देशों के संबंधों को प्रगाढ़ करना।
4. भारत और श्रीलंका के धार्मिक और गिरिजन संबंधों की अध्ययन से आपको उनके धार्मिक आदर्शों, आचरणों और परंपराओं का अध्ययन

शोध पद्धति

श्रीलंका, भारत का पड़ोसी देश होने के नाते दोनों देशों के संबंधों का विश्लेषण करने के लिए पत्र –पत्रिकाओं में छपे लेखों और विद्वान जनों द्वारा इंटरनेट पर उपलब्ध लेखों, भारत–

श्रीलंका संबंधों पर उपलब्ध पुस्तकों तथा अन्य द्वितीय के स्रोतों का प्रयोग किया गया। इस पद्धति में अतीत की घटनाओं, विकास क्रमों तथा विगत अनुभूतियों का वैज्ञानिक अध्ययन एवं अन्वेशण किया गया है

भारत श्रीलंका के पौराणिक रिश्ते

हिंदू प्राचीन कथाओं के अनुसार श्रीलंका को भगवान शिव ने बसाया था. इतिहास में कहा गया है कि भगवान शिव की आज्ञा से विश्वकर्मा ने यहां पार्वती जी के लिए सोने का एक महल बनवाया था. जिसके बाद ऋषि विश्रवा ने शिव के भोलेपन का लाभ उठाकर उनसे लंकापुरी दान में मांग लिया. तब पार्वती ने ऋषि विश्रवा को श्राप दिया कि महादेव का ही अंश एक दिन उस महल को जलाकर कोयला कर देगा और उसके साथ ही तुम्हारे कुल का विनाश आरंभ हो जाएगा।

श्रीलंका को शिव के पांच निवास स्थानों का घर माना जाता है. शिव के पुत्र कार्तिकेय यानी मुरुगन यहां के सबसे लोकप्रिय हिंदू देवताओं में से एक हैं। मुरुगन की पूजा यहां के ना सिर्फ तमिल हिंदू करते हैं बल्कि बौद्ध सिंहली और आदिवासी भी करते हैं। श्रीलंका के अलग़–अलग स्थानों पर ऐसे कई मंदिर हैं जो हिन्दू और बौद्धों की साझा संस्कृति को दर्शाते हैं।

वाल्मीकि रामायण में बताया गया है कि लंका समुद्र के पार द्वीप के बीच में स्थित है। जिसका मतलब है कि आज की श्रीलंका के मध्य में रावण की लंका स्थित थी। भारतीय महाकाव्यों की परंपरा पर आधारित 'जानकी हरण' के रचनाकार कुमार दास के संबंध में कहा जाता है कि वे कुमार दास महाकवि कालिदास के घनिष्ठ मित्र थे। बता दें कि कुमार दास (512–21ई.) लंका के राजा थे. इसे पहले 700 ईसा पूर्व में श्रीलंका में राम के जीवन से जुड़ी कहानियां घर–घर में प्रचलित रही है. इस कहानी को सिंहली भाषा में सुनाया जाता था. जिसे 'मलेराज की कथा' कहते थे।

श्रीलंका और भारत दो अलग–अलग देश होते हुए भी पौराणिक कथाओं के आधार पर जुड़े हुए हैं। कई प्रचलित कथाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और धार्मिक आधार पर रिश्ते सदियों पुराने हैं। श्रीलंका में रह रहे हिन्दुओं की आबादी देश की कुल आबादी का लगभग 12.60 प्रतिशत है। एक रिसर्च की मानें तो श्रीलंका की प्रमुख जाति सिंघल है और इस सिंघल जाति का संबंध उत्तर भारत के लोगों से है। सिंघल भाषा गुजराती और सिंधी भाषा जैसी ही है। भारत के धनुषकोडी से श्रीलंका की दूरी महज 18 मील है।

ऐतिहासिक संबंधः

भारत और श्रीलंका के बीच प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यापारिक संबंधों का एक लंबा इतिहास रहा है।दोनों देशों के बीच मजबूत सांस्कृतिक संबंध हैं, कई श्रीलंकाई अपनी विरासत की जड़ें भारत में खोजते हैं। बौद्ध धर्म जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई थी, श्रीलंका में भी एक महत्त्वपूर्ण धर्म है।

भारत–श्रीलंका वाणिज्यिक संबंध

दोनों देशों के बीच वाणिज्यिक संबंध भी काफी गहरे और पुराने हैं. भारत श्रीलंका का सबसे करीबी पड़ोसी है और दोनों देश एक समुद्री सीमा साझा करते हैं. दोनों देशों ने 28 दिसंबर 1998 को भारत – श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौता (आईएसएफटीए) पर हस्ताक्षर किया था।यह श्रीलंका का

पहला द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौता था। द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद साल 2000 से भारत श्रीलंका व्यापार बढ़ने लगा। साल 2004 तक भारत–श्रीलंकाई व्यापार 128 प्रतिशत बढ़ गया और साल 2006 तक यह चौगुना होकर यूएस + 2.6 बिलियन तक पहुंच गया। वहीं साल 2010 दोनों देशों के द्विपक्षीय व्यापार के लिए सबसे अच्छा साल माना जाता है। दरअसल 2010 के पहले सात महीनों में भारत के श्रीलंका के निर्यात में 45ः की वृद्धि हुई थी। भारत श्रीलंका में विकास गतिविधियों के कई क्षेत्रों में भी सक्रिय है. भारत द्वारा दिए गए कुल विकास ऋण का लगभग छठा हिस्सा श्रीलंका को उपलब्ध कराया जाता है।

आर्थिक संबंधः अमेरिका और ब्रिटेन के बाद भारत श्रीलंका का तीसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है। श्रीलंका के 60ः से अधिक का निर्यात भारत–श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौते के अंतर्गत होता है। भारत श्रीलंका में एक प्रमुख निवेशक भी है।भारत से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश वर्ष 2005 से 2019 के बीच लगभग 1.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।

रक्षा

भारत और श्रीलंका संयुक्त सैन्य (मित्र शक्ति) और नौसेना अभ्यास (SLINEX) आयोजित करते हैं ।भारतीय सेना और श्रीलंकाई सेना के बीच 04–16 अक्टूबर 2021 तक आयोजित संयुक्त सैन्य अभ्यास का 8वां संस्करण, युद्धाभ्यास मित्र शक्ति का समापन कॉम्बैट ट्रेनिंग स्कूल, अम्पारा में हुआ। अर्द्ध–शहरी इलाके में आतंकवाद विरोधी और विद्रोह रोधी अभियानों पर आधारित अभ्यास मित्र शक्ति श्रीलंकाई सेना द्वारा किया जा रहा सबसे बड़ा द्विपक्षीय अभ्यास है और यह भारत और श्रीलंका की बढ़ती रक्षा साझेदारी का एक प्रमुख हिस्सा है। कोलंबो में भारतीय उच्चायोग द्वारा 07 जून, 2023 को "भारत–श्रीलंका रक्षा संगोश्ठी सह प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन श्रीलंकाई रक्षा राज्य मंत्री प्रेमिता बंडारा तेनाकून ने किया। इस प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में दोनों देशों के उद्योगों ने हिस्सा लिया और अपने उत्पादों का प्रदर्शन किया।

भारत–श्रीलंका संबंधों में बीच मुद्देः

मछुआरों की हत्याः श्रीलंकाई नौसेना द्वारा भारतीय मछुआरों की हत्या दोनों देशों के बीच एक पुराना मुद्दा है। वर्ष 2019 और वर्ष 2020 में कुल 284 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया गया तथा कुल 53 भारतीय नौकाओं को श्रीलंकाई अधिकारियों ने जब्त कर लिया।

चीन का प्रभावः श्रीलंका में चीन का तेजी से बढ़ता आर्थिक हित और परिणाम के रूप में राजनीतिक दबदबा भारत–श्रीलंका संबंधों को तनावपूर्ण बना रहा है।चीन पहले से ही श्रीलंका में सबसे बड़ा निवेशक है, जो कि वर्ष 2010–2019 के दौरान कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का लगभग 23.6 फीसदी था, जबकि भारत का हिस्सा केवल 10.4 फीसदी है।

श्रीलंका का 13वाँ संविधान संशोधनः यह एक संयुक्त श्रीलंका के भीतर समानता, न्याय, शांति और सम्मान के लिये तमिल लोगों की उचित मांग को पूरा करने हेतु प्रांतीय परिषदों को आवश्यक शक्तियों के हस्तांतरण की परिकल्पना करता है। भारत इसके कार्यान्वयन का समर्थन करता है लेकिन श्रीलंका सरकार ने अभी तक 13वें संशोधन को 'पूरी तरह से लागू' नहीं किया है।

चीन का दबदबा

पिछले कुछ वर्शों में इस द्वीपीय देष में चीन की पहुंच में नाटकीय ढंग से बढ़ोतरी हुई है। श्रीलंका ने दो वजहों से चीन को गले लगाया है। पहली वजह ये है कि तमिल मुद्दे के बारे में भारत की नीयत को लेकर श्रीलंका का षक बना हुआ है। दूसरी वजह भारत में नौकरषाही की प्रक्रिया की धीमी रफ्तार है जो किसी मंजूरी में देर लगाती है।। इसके कारण श्रीलंका को लेकर भारत की प्रतिबद्धता वहां संदेह पैदा करती है। पिछले साल श्रीलंका ने एक लोन मोरेटोरियम की मांग की थी जिसे मंजूर करने में भारत सरकार को पांच महीने लग गए जबकि चीन ने बिना वक्त गंवाए अपने विकास बैंक से अतिरिक्त 500 मिलियन अमेरिकी डॉलर का एक कर्ज मंजूर किया। चीन के तुरंत फैसला लेने की प्रक्रिया और बड़ी मदद उसे एक ज्यादा आकर्शक साझेदार बनाती है।

लेकिन तब भी चीन के साथ ये आर्थिक मेलजोल श्रीलंका के लिए मुष्किलों के बिना नहीं रहा है। श्रीलंका को कर्ज के जाल में फंसने के लिए मजबूर किया गया है और उसे अपनी रणनीतिक संपत्तियों को डेट–इक्विटी स्वैप के जरिए बेचना पड़ा है। जिसकी वजह से वहां ऐसे क्षेत्र बन गए हैं जहां उसकी अपनी संप्रभुता बेअसर हो गई है। इसकी वजह से मजबूर होकर श्रीलंका को आने वाले समय में अलग–अलग देषों के साथ संबंधों को ज्यादा प्राथमिकता देनी होगी और अपनी विदेष नीति और अंतर्राश्ट्रीय संबंधों को संतुलित करना होगा.

भारत की ताकत

षिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और पर्यटन में चीन के मुकाबले भारत काफी मजबूत साझेदार है। भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग योजना और कोलंबो प्लान के तहत श्रीलंका के नागरिकों के लिए अलग–अलग तकनीकी और प्रोफेषनल कोर्स में अल्प और मध्यकालीन ट्रेनिंग के लिए 400 सीटें हैं। 2017 से श्रीलंका के छात्र नेषनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट (एनईईटी) और आईआईटी जेईई (एंडवास्ड) परीक्षा में भी षामिल हो सकते हैं। इन षैक्षणिक आदान–प्रदान को भारत श्रीलंका के संभावित षैक्षणिक जोन में एक इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) स्थापित करके और मजबूत कर सकता है। श्रीलंका के पूर्वोत्तर में कैंडी में भारत तकनीकी और इंग्लिष लैंग्वेज ट्रेनिंग सेंटर जैसे कि श्रीलंका–इंडिया सेंटर फॉर इंग्लिष लैंग्वेज ट्रेनिंग (एसएलआईसीईएलटी) स्थापित कर सकता है। इसके अलावा भारत और श्रीलंका को फार्मास्युटिकल्स मैन्युफैक्चरिंग में गहन सहयोग पर विचार करना चाहिए जैसा कि भारतीय विदेष मंत्री जयषंकर की इस साल श्रीलंका यात्रा के दौरान साझा बयान में एलान किया गया था।

भारत के सॉफ्ट पावर का श्रीलंका को फायदा

तकनीकी सेक्टर में भारत अपनी इंफॉर्मेषन टेक्नोलॉजी कंपनियों की श्रीलंका में मौजूदगी का विस्तार करके वहां नौकरियों के अवसर बढ़ा सकता है। ये संगठन हजारों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नौकरियों के मौके बना सकते हैं और इस द्वीपीय देष की सेवा अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे सकते हैं। ये ऐसा विशय है जिसे दोनों पक्षों ने विदेष मंत्री जयषंकर की यात्रा के दौरान स्वीकार किया था। फार्मास्युटिकल्स के लिए एक विषेश आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) के अलावा दोनों पक्ष इंफॉर्मेषन टेक्नोलॉजी और षिक्षा के सेक्टर में भी ऐसा प्रावधान करने पर विचार कर सकते हैं। अभी श्रीलंका

संविधान का मसौदा तैयार करने का कठिन काम शुरू कर रहा है, उसमें भारत अल्पसंख्यकों के अधिकार और अलग–अलग लोगों के प्रबंधन में अपने अनुभव के बारे में बता सकता है। भाषाई और सांस्कृतिक स्वतंत्रता, शिकायतों के समाधान और प्रतिनिधिक संगठनों में आरक्षण सुनिश्चित करने के लिए नीतियों का मसौदा तैयार करने में भारत श्रीलंका की मदद कर सकता है।

भारत और श्रीलंका को लोगों के स्तर पर संपर्क को बढ़ाने का तरीका तलाशना चाहिए। श्रीलंका में ज्यादातर पर्यटक भारत से आते हैं लेकिन धार्मिक पर्यटन की संभावना की तलाश करना अभी बाकी है। पिछले साल प्रधानमंत्री मोदी ने श्रीलंका के साथ बौद्ध संबंधों को बढ़ावा देने के लिए 15 मिलियन अमेरिकी डॉलर के अनुदान का ऐलान किया था। इस पैसे का इस्तेमाल कर दोनों देश एक बौद्ध ज्ञान और पर्यटन कॉरिडोर का निर्माण करने पर विचार कर सकते हैं। अंत में, दोनों देशों में क्रिकेट के महत्व और मौजूदगी का फायदा उठाना चाहिए. श्रीलंका प्रीमियर लीग (एलपीएल) के साथ साझेदारी के जरिए इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का विस्तार श्रीलंका में करने से आम लोगों के स्तर पर संपर्क को बढ़ावा मिलेगा और पर्यटन को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

इन क्षेत्रों में सहयोग से उन मुद्दों पर चिंता कम नहीं होगी जहां दोनों पड़ोसियो की सोच एक जैसी नहीं है यानी तमिल अल्पसंख्यकों का अधिकार और श्रीलंका की अर्थव्यवस्था में चीन का महत्व। लेकिन इतिहास, सांस्कृतिक नजदीकी और भौगोलिक मजबूरी भारत और श्रीलंका को इन मुद्दों से आगे बढ़कर स्वाभाविक और स्थायी साझेदार बनाते हैं और नये क्षेत्रों में सहयोग की तलाश करके अपने–अपने देशों की आर्थिक और विकास संबंधी आकांक्षाओं को साझा तौर पर प्रोत्साहन देने के लिए कहते है।

श्रीलंका, भारत के दक्षिण में स्थित एक छोटा–सा द्वीपीय देश है। दोनों राष्ट्र सांस्कृतिक आधार पर वर्षों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। सैन्य गुटों का विरोध, औपनिवेशिक स्वतंत्रता, निःशस्त्रीकरण एवं हिंद महासागर को शांतिपूर्ण रखने के प्रयास संबंधी मुद्दों पर दोनों देश समान विचार रखते हैं। इसके अतिरिक्त दोनों देशों के मध्य विवाद के क्षेत्र भी रहे। सबसे मुख्य विवादित मुद्दा तमिलों, जो कि भारतीय मूल के हैं एवं ब्रिटिश शासकों द्वारा बागवानी मजदूरों के रूप में श्रीलंका ले जाए गए थे, की नागरिक एवं समान अधिकार दिलाने से संबंधित हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत–श्रीलंका संबंध और अधिक घनिष्ठ हुए हैं। मई 2000 में विदेष मंत्री जसवंत सिंह ने श्रीलंका की यात्रा की तथा श्रीलंका में स्थायी षांति की बहाली हेतु श्रीलंकाई षीर्श नेताओं से बातचीत की। फरवरी 2001 में श्रीलंका की राश्ट्रपति चंद्रिका कुमारतुंग भारत की यात्रा पर आयीं और आपसी विष्वास व समझबूझ पर आधारित घनिश्ठ एवं मैत्रीपूर्ण संबंधों की प्राथमिकता को दोहराया। भारत द्वारा श्रीलंका को 100 मिलियन डॉलर का ऋण किस्तों के रूप में उपलब्ध कराया गया है। भारत–श्रीलंका के बीच मार्च 2000 से मुक्त व्यापार समझौता लागू किया गया तथा दोनों देषों के मछुआरों को पेष आ रही परेषानियों को सुलझाने हेतु कई कदम उठाये गये। भारत विपत्ति के समय सदैव श्रीलंका को सहायता प्रदान करता रहा है। भारत सरकार द्वारा श्रीलंका को कई ऋण प्रदान किये गये हैं। दिसम्बर 2004 में सुनामी आपदा के पष्चात् श्रीलंका सरकार के अनुरोध पर नौवहन जहाजों व हैलिकॉप्टरों में भारी मात्रा में राहत सामग्री भेजी गई।

लिट्टे, जो श्रीलंका सरकार के लिए पिछले तीन दशक से भी अधिक समय से सिरदर्द एवं चुनौती बना हुआ था, का सफाया करने में हाल में श्रीलंका सरकार को सफलता प्राप्त हुई है। इसके साथ ही श्रीलंका को अपनी सबसे बड़ी आंतरिक समस्या से निजात मिली। लेकिन अगर गौर से देखा जाए तो मूल समस्या अभी भी बनी हुई है। वस्तुतः लिट्टे का जन्म भारतीय तमिलों को समान नागरिकता एवं अधिकार दिलाने के उद्देश्य से हुआ था। अतः जब तक तमिलों का सम्मान सहित पुनर्वास एवं अधिकार स्थापित नहीं होते, तब तक लिट्टे के पतन के बाद भी हिंसा जारी रहेगी। अगर भारत की भूमिका के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो उसे अपनी नीति जारी रखनी होगी और यह सुनिश्चित करना होगा कि तमिलों को उनका सही स्थान एवं संवैधानिक अधिकार प्राप्त हों। इस संदर्भ में श्रीलंका के संविधान के 15वें संशोधन में जो वादे भारत से किए गए हैं उनका जल्द से जल्द कार्यान्वयन हो।इसकी सफल परिणति के लिए भारत को विश्व समुदाय का समर्थन भी हासिल करना होगा।

श्रीलंका की वर्तमान स्थिति

श्रीलंका फिलहाल गंभीर आर्थिक और राजनीतिक संकट से गुजर रहा है. माना जा रहा है कि श्रीलंका 1948 में ब्रिटेन से आजाद होने के बाद पहली बार गंभीर आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। देश में रोजमर्रा के सामानों की कीमत इतनी महंगी है कि आम इंसान उसे खरीदने में सक्षम नहीं है। देश में खाने–पीने के सामान का संकट और ईंधन भी आसानी से नहीं मिल रहा है। देश में 13 घंटे बिजली गुल रह रही है.। इन सबके कराण श्रीलंका के आम लोग सड़कों पर उतर कर प्रदर्शन कर रहे हैं।लगातार हो रहे प्रदर्शन को देखते हुए पूर्व प्रधानमंत्री महिंदा राजपक्षे को इस्तीफा देना पड़ा था. उनके बाद श्रीलंका के प्रधानमंत्री बने रानिल विक्रमसिंघे ने कहा है कि स्थिति बेहतर होने से पहले और ज्यादा खराब होंगी. उन्होंने भारत सहित दुनिया के दूसरे देशों से वित्तीय मदद भी मांगी है।

भारत ने श्रीलंका में संकट की स्थिति में बड़े पैमाने पर राहत सहायता एवं विस्थापितों के लिए फैमिली पैक और दवाएं भेजी। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2008 में भारत, श्रीलंका का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार रहा और उसके साथ द्विपक्षीय व्यापार 3.27 अरब अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया है। भारत, श्रीलंका में दूसरा सबसे बड़े निवेशक के रूप में भी सामने आया है।

भारत के वित्तीय आश्वासन का महत्त्वः

श्रीलंका के आधिकारिक लेनदारों जैसे कि चीन, जापान और भारत द्वारा श्रीलंका को पर्याप्त वित्तपोषण आश्वासन प्रदान किये जाने के बाद ही अतराष्ट्रीय मुद्रा कोश द्वारा श्रीलंका को 2.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर का अनंतिम पैकेज जारी किया जाएगा। जिसमे से 330 डॉलर की पहली किस्त श्री लंका को मिल गयी है।वित्तपोषण संबंधी आश्वासन के निर्णय का आधार भारत के ''पड़ोसी पहले (Neighborhood First) के सिद्धांत पर आधारित है।एशियाई द्वीप राष्ट्र के पहले द्विपक्षीय लेनदार के रूप में भारत ने अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोश (International Monetary Fund - IMF) को लिखित वित्त संबंधी आश्वासन भेजकर पिछले वर्ष हुए आर्थिक गिरावट के बाद इसके आवश्यक ऋण पुनर्गठन कार्यक्रम का आधिकारिक समर्थन किया है।भारत के विदेश मंत्री की यात्रा के दौरान उच्च

प्रभाव सामुदायिक विकास परियोजना (High Impact Community Development Project& HICDP) की सीमा बढ़ाने के संबंध में भारत और श्रीलंका के बीच एक द्विपक्षीय समझौते पर भी हस्ताक्षर भी किये गए थे।

निष्कर्श

पिछले वर्षों में विभिन्न स्तरों पर द्विपक्षीय आदान प्रदान तथा श्रीलंका में आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्तियों के विकासात्मक सहयोग के लागू होने की सार्थक प्रगति से दोनों देशों के बीच दोस्ताना सम्बंधों को और मजबूत करने में मदद मिली है। वर्तमान में भारत–श्रीलंका सम्बंध मजबूत हैं तथा ऐतिहासिक लगाव तथा मजबूत आर्थिक एवं विकासात्मक भागीदारी क ीसमूहिक विरासत; जो कि पिछले वर्षों में बनी है, पर निर्मित होकर सार्थक ऊंचाई छूने को तत्पर हैं। भारत ने अपने पड़ोसियों के साथ संबंधों को सशक्त करने हेतु 'नेबरहुड फर्स्ट पालिसी' का पालन किया है, भारत, श्रीलंका को मौजूदा संकट से बाहर निकालने और श्रीलंका को उसकी क्षमता का एहसास कराने में मदद करने के लिये अतिरिक्त कदम उठा सकता है, ताकि एक स्थिर, मैत्रीपूर्ण पड़ोस का लाभ उठाया जा सके। इसलिए उद्देश्यों और हितों में समानता के बावजूद भारत और श्रीलंका के लिए सावधानीपूर्वक और सोच–समझकर अपनी द्विपक्षीय साझेदारी को फिर से जीवित करने की तत्काल जरूरत है।

संदर्भ

1. https://hindi.webdunia.com/sanatan-dharma-history/history-of-sri-lanka-119042400060_1.html
2. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/india-sri-lanka-relation-1chrome-extension://efaidnbmnnnibpcajpcglclefindmkaj/https://mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Sri_Lanka_Jan_2015_hi.pdfelations-1
3. https://www.vivacepanorama.com/india-sri-lanka-relations/
4. https://www.abplive.com/explainer/india-sri-lanka-relations-india-sri-lanka-relations-are-centuries-old-know-where-do-its-roots-come-from-2168830.
5. Venugopal, R. (2003). The global dimensions of conflicts in Sri Lanka. *QEH working paper Series.* PS99. Pg. **11.**
6. Sahadevan, P., Singh, S. (2005). *India and neighbors*. New Delhi: CNF.
7. Sikri, R. (2009). *Challenges and strategy: Rethinking Indian foreign policy*. SAGE Publications: California.
8. Ray, J. K. (2011). *India's foreign relations 1947–2007*. Routledge Publishers: New York.
9. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1764456

10. (2016). India Sri Lanka to begin talk on new agreement. *Daily News* (Lake House, Colombo). 7 February. http://www.dailymirror.lk/110600/Can-more-services-trade-with-India-benefit-Sri-Lanka-.
11. (2017). Travel & Tourism: Economic Impact 2017—Sri Lanka. *World Travel & Tourism Council*. Retrieved 11 December. from https://www.wttc.org/-/media/files/reports/economic-impact-research/countries-2017/srilanka2017.pdf.
12. Melegoda, N. (2018). In C. A. Josukutty & J. Prabhash (Eds.). *India's bilateral relations and foreign policy*. Pg. 15. New Century Publications: New Delhi.
13. Devapriya. (2022). Journal of Indo-Pacific Affairs. August.